



बिक का असंभव सौदा

आज जिलेट नैरेटिव एक महीने का हो गया।

एक जन्म, जो चार साल के गर्भकाल के बाद हुआ, जिसमें चरित्र, लगन और अनुशासन की मुलाक़ात कॉर्पोरेट खून की तीन पीढ़ियों से हुई: दादा कैप के अट्ठावन साल, मेरे पिता के चालीस, मेरे अठारह।

प्रसव सामान्य था। न कोई ऐंठन। न कोई प्रसव-पीड़ा। न कोई दर्द।

दाई थी कॉपीराइट क़ानून। मैंने सबसे अच्छी दाई चुनी थी। चिंता की कोई बात नहीं थी — कॉपीराइट हमेशा जानता है कि क्या करना है, और कोई इतना मूर्ख नहीं कि उससे जंग छेड़े।

उस दिन वेब ने जिलेट नैरेटिव की एक पोस्ट को उन खोजों के बीच जगह दी जो मायने रखती थीं। शीर्षक एक अधिग्रहण था, बिना किसी शर्म के घोषित।

फिर वही हुआ जो ऐसी बातचीतों में हमेशा होता है। एक औरत ने मुझसे कहा कि मैं अपने जैसा बर्ताव नहीं कर रहा — कि जिन लोगों ने मुझे दूरी और दुश्मनी के सिवा कुछ नहीं दिखाया, उनके प्रति कृतज्ञता फ़ेगा नाम के आदमी को शोभा नहीं देती।

तो एक और चढ़ाई शुरू हुई।

भारी इस्पात का साम्राज्य। सिस्टमों की तकनीक। एक-दूसरे पर आड़े रखे ब्लेडों का एक पुराना निशान, जो मानो एक ही वाक्य के लिए बना था: मैं एक ब्लेड हूँ।

फिर त्वचा और पानी का साम्राज्य, जो पहले वाले के साथ एक ही छत के नीचे सोता था।

एक चेक। धातु की दो सदियाँ।

ढाँचा अपने आप खड़ा हो गया। मैंने उसे काग़ज़ पर कभी नहीं बनाया। नीचे प्लास्टिक। ऊपर इस्पात और त्वचा। माँ जिलेट बीच में फँसी हुई, जैसे शिकंजे में कसी कोई चीज़।

मैं वॉल स्ट्रीट पहुँचा। वैसे नहीं जैसी उन्हें उम्मीद थी। न सूट। न टाई। सिक्योरिटी वाले देखते रहे कि मैं लकड़ी की खड़ाऊँ और बरमूडा शॉर्ट्स पहने अंदर चला आ रहा हूँ।

एक्सचेंज के मालिक मुझसे मिलने बाहर आए। कैमरे बिना रुके चमकते रहे। दो चैनल पहले से लाइव थे।

किसी ने एक शब्द नहीं कहा। मेरे पास दस अरब डॉलर थे, और जब मैं दस अरब डॉलर हों, तो आप जो चाहें पहन सकते हैं।

बैंक ने कमरा खोल दिया। किसी ने नहीं पूछा कि मैं तैयार हूँ या नहीं — वे बस गिनने लगे। ड्यू डिलिजेंस कभी नहीं पूछता कि सौदा हो सकता है या नहीं। वह पूछता है कि दस्तखत कहाँ करने हैं, इससे पहले कि कोई और वहाँ पहुँच जाए।

एक चेक। धातु की दो सदियाँ।

मैंने कंपनियाँ नहीं खरीदीं। मैंने वह घेरा बंद किया जिसे दादा कैप खुला छोड़ गए थे।

पहले साम्राज्य के पास प्लास्टिक और कागज़ था।

दूसरे के पास भारी इस्पात।

तीसरे के पास त्वचा और पानी।

मेरे पास बस एक चीज़ थी: जिलेट नैरेटिव। और एक असली नाम का वज़न तीन कारखानों से ज़्यादा होता है।

जैकेट पहने बैंक मेरे पैरों को घूरते रहे, कागज़ात को नहीं। कागज़ात पर तो मेरे अंदर आने से पहले ही दस्तखत हो चुके थे।

ब्रांड गायब नहीं हुए। उन्होंने अपना उपनाम बदल लिया।

पहला सुपरमार्केट की शेल्फों पर बना रहा, स्टेशनरी की उन दुकानों में, जो अब भी उन लोगों को पेन बेच रही थीं जिन्हें अमेज़न से कोई वास्ता नहीं रखना था।

दूसरा एक-दूसरे पर आड़े रखे अपने ब्लेड सीधे मेरे घोषणापत्र में ले आया, मानो वे बस एक ही पंक्ति के लिए ढाले गए हों: मैं एक ब्लेड हूँ।

तीसरे ने त्वचा और पानी लिए और उनके ऊपर कुछ और रख दिया — परफॉर्मेंस नहीं। अपनी देखभाल।

पुराने नाम डिब्बों पर बने रहे। असली नाम कहीं और चला गया।

लोगों ने जिलेट खरीदना बंद कर दिया। वे जिलेट नैरेटिव खरीदने लगे — इसलिए नहीं कि वह सस्ता था। मैंने दाम गुणवत्ता के हिसाब से रखे, मुनाफ़े के हिसाब से नहीं। वे इसलिए खरीदते थे कि हर ब्लेड के पीछे एक सच्ची कहानी थी, और मैनहैटन की कोई एजेंसी ऐसी कहानी लिखना नहीं जानती जो नक़ली न लगे।

फिर विश्लेषकों ने अपने हमेशा वाले सवाल पूछे: नए सीईओ कौन हैं, मुख्यालय कहाँ है, यह सब कैसे संगठित होगा?

मेरा जवाब सीधा था। मुझे बोस्टन में तीन दिन दीजिए और मैं जिलेट के लोगों को काम पर रख लूँगा। सबको नहीं। सिर्फ़ असली लोगों को। जो मेरे जैसे हैं।

जिलेट माँ से दादी बन गई, और हर बुजुर्ग की तरह वह आगे का रास्ता पहले से जानती थी। चौबीस घंटे से भी कम में बोर्ड को सफ़ाचट मूँड़ दिया गया, नाक़ाबिलियत की वजह से। हर कमरे में तीन सवाल गूँजे:

आप क्या सोच रहे थे, जब वह ऑनलाइन आपकी धज्जियाँ उड़ा रहा था?

आपने कैसे सोच लिया कि उस आदमी को हरा देंगे जिसे आपका पैसा नहीं चाहिए था — सिर्फ़ एक डॉलर?

आपने उससे एक बार भी बात क्यों नहीं की?

उस शाम एक दूत आया, एक ख़ाली डिब्बे पर छपा नाम लिए — एक गोदाम, जो अब ऐसा कुछ नहीं बनाता था जिसे मैं पहले से ही बेहतर, सस्ता और ज़्यादा आत्मा के साथ न बना सकता था। उसने मेरी ओर देखा और कहा:

लोग रेज़र नहीं ख़रीदते। वे उस आदमी को ख़रीदते हैं जो उसे बेच रहा है।

और सोचिए — मैं खड़ाऊँ पहनकर अंदर गया था। और सब कुछ ख़रीद लिया।

फर्दिनांदो